मध्यकाल में मुगल अमीर वर्ग की शिक्षा, साहित्य, कला तथा संगीत

Kritika Pareek

Department of History
Gurugram, Haryana.

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 11, Issue 5, (September-October 2023)

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

Abstract
आधुनिक काल की भांति मध्यकाल में शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के लिए कोई शिक्षा विभाग नहीं था, राज्य शिक्षा के लिए जनता के प्रति उतरदायी नहीं था। फिर भी मुगल शासकों तथा उनके अमीरों ने शिक्षा तथा साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया था। अमीरों में से अनेक अमीर न केवल शिक्षित थे, बल्कि विविध विषयों के योग्य विद्वान भी थे। अमीर वर्ग के लोग अपने बच्चे की उचित शिक्षा के लिए निजि अध्यापकों की नियुक्ति करते थे। ये निजि अध्यापक अमीरों के पुत्रों को उचित शिक्षा देते थे। मुसलमानों में कुछ सम्पन्न व्यक्तियों के आवासों में ही मकतब स्थापित थे। जहां मुसलमान लड़कियां भी धर्मशास्त्र तथा लौकिक विषयों का ज्ञान प्राप्त करती थी।

Introduction
इस समय आगरा, सीकरी, गुजरात, कश्मीर, लाहौर, सियालकोट थट्टा, जौनपुर, अजमेर और लखनऊ आदि मुस्लिम शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। हिन्दु शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्रों में नदियां, मिथिला, मथुरा, प्रयाग आदि प्रमुख थे। परन्तु 18वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में बादशाह मुहम्मदशाह के समय में दिल्ली (शहांजानाबाद) शिक्षा तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में मुख्य केन्द्र बन गया था। इस समय में अनेक मदरसों एवं खानकाहों की स्थापना की गई थी। जिनमें मुख्य रूप से शेख फखरूउद्दीन देहलवी, ख्वाजा मीर दर्द, शबदुल्ला गुलशन, मिर्जा अब्दुल कादिर बेदिल, शाहकुलीमुल्ला आदि के खानकाह बहुत प्रसिद्ध थे। जहाँ पर दूर-दूर से लोग आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए आते थे। इन सबके अतिरिक्त दिल्ली में अनेक प्रसिद्ध मुस्लिम शिक्षक थे जो लोगों को आध्यात्मिक शिक्षा देते थे। जिनमें प्रमुख थे शाह अब्दुल रसूल, शाह शरीफ, शाह सोन्दी अबंलवी, शाहफेजल, शाह गुलाममुहम्मद और शाह अब्दुल लतीफ। अमीर निजामउलमुल्क आसफजहां के दरबार में बहुत से कवि और विद्वान संरक्षित थे। जुल्फिकारखाँ कवियों और विद्वानों के प्रति उदारता के लिए प्रसिद्ध था। एक बार शेख नासीर अली सिरहिंदी जो एक कवि था उसने कविता के माध्यम से उसकी प्रशंसा की थी जिसके लिए उसे इनाम स्वरूप जुल्फिकारखाँ ने तीस लाख और एक हाथी प्रदान किया था। अवध के नवाब शआदत खाँ ने सैय्यद मुहम्मद फिदाई को सरंक्षण दिया था जोकि एक प्रमुख शिक्षक था। इसके अतिरिक्त हसमतमुहम्मद रहीम खान और ताली जैसे विद्वानों को भी संरक्षण प्रदान किया था। इसी तरह सफ्दरजंग खान ने विद्वानों को न केवल सरंक्षण एवं अनुदान प्रदान किया। बल्कि उनके सम्मान में उन्हें उपाधि और पदवी प्रदान की थी।

औरंगजेब ने अपने प्रान्तीय दीवानों को आदेश दे रखा था कि योग्य छात्रों को शाही खजाने से सहायता दी जाय। गुजरात के सूबेदार कमरूद्दीन खाँ ने एक लाख चैबीस हजार की लागत से अहमदाबाद में एक मदरसे का निर्माण करवाया था। इस मदरसे की सहायता के लिए बादशाह ने सावीना नामक ग्राम कमरूद्दीन खां के नाम कर दिया था तथा योग्य छात्रों को दो रूपए रोज देने की अनुमति दी थी। 1718 ई॰ में नदियां में राम रूद्र विद्यानिधि के द्वारा खगोल विद्या के

लिए भी एक अलग विभाग खोला गया। अनूप पुस्तकालय बीकानेर में भी अनेक पांडुलिपियां उपलब्ध हैं, जिसमें शिक्षा के उत्थान के लिए किए गए उपायों का विवरण दिया गया है। उपरोक्त पुस्तकालय में गणित, ज्योतिष शास्त्र, खगोल विज्ञान, दर्शन शास्त्र, नीतिशास्त्र पर अनेक उच्च स्तरीय ग्रंथ हैं जो हिन्दू अमीरों के सरंक्षण में लिखे गए। राजपूत शासक तथा उनके अमीर भी अपना पुस्तकालय रखते थे। आम्बेर का पुस्तकालय बहुत समृद्ध था।

मुगलकाल में भाषा व साहित्य के विकास में भी महत्वपूर्ण उन्नति हुई जिसमें बादशाहों के अलावा अमीरों ने भी विशेष योगदान दिया था। उस समय बादशाहों ने फारसी को राजभाषा बनाया था। फारसी के अतिरिक्त संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी, उर्दू और गुजराती आदि भारतीय भाषाओं एवं साहित्यों का भी सर्वांगीण विकास इस काल में हुआ। अठारहवीं सदी के पूर्वाद्ध में विशेषकर उर्दू भाषा का काफी विकास हुआ। अनेकों प्रसिद्ध कवि हुए थे।

स्वयं शहजादा कामबख्श विद्वान कवि था और उसने अनेकों कवियों को सरंक्षण भी दिया था। अठारहवीं सदी का काम उर्दू साहित्य का काल कहा जाता है। इस काल के उर्दू कवियों में सर्वप्रमुख शाहहातिम (1699-1791), मिर्जा रफी सौदा (1713-1781) मीर तकी मीर (1722-1810), मीर दर्द (1719-1785), नजीर अकबराबादी (1735-1830) इस काल की उर्दू साहित्य में दार्शनिक विचारधाराओं जैसे रहस्यवाद, उदारवाद और मानवतावाद का चित्रण है इस प्रकार उन्होंने अठारहवीं सदी के बौद्धिक विकास को नई दिशा दी। मिर्जा रफी सौदा की पुस्तक 'शहर आशोब' इसी काल में लिखी गई । फैजले खान अपना सम्पूर्ण जीवन अब्दुलसैय्यद खान के सरंक्षण में व्यतीत करता है। मुहम्मद शाह ने दक्षिण के सुप्रसिद्ध उर्दू कवि शमसुद्दीन वली (1668-1774) को मुगल दरबार में आमन्त्रित किया था। इस काल में खाफी खां ने 'मुंतखब-उल-लुबाब', मिर्जा मुहम्मद काजमी ने 'आलमगीरी-नामा', ईश्वर दास नागर ने 'मासिर-ए-आलमगीरी', भीमसेन ने 'नुख्शा-ए-दिलखुश' तथा सुजान राय खत्री ने 'खुला-साऊत-तवारीख' की रचना की। इसीकाल में मुस्लिम विधि से सर्वाधिक प्रमाणित सार-ग्रंथ 'फतवा-ए-आलमगिरी' की भी रचना हुई। औरंगजेब के उत्तराधिकारियों के शासनकाल में भी दरबारी इतिहासकारों के द्वारा ऐतिहासिक ग्रन्थों का निर्माण चलता रहा। इसी काल में गुलाम हुसैन की रचना 'सियार-उल-मुताखरीन' लिखी जिसे बंगाल के नवाब का सरंक्षण प्राप्त था, मुहम्मद अली अंसारी का 'तारीख-ए-मुजफ्फरी', हरिचरण दास का 'तारीख-ए-चार गुजबार-शूजाई', गुलाब अजी तक्की का 'इमाद-उल-सआदत', खैर-उद-दीन का 'इब्रात नामा' तथा मुर्तजा विलग्रामी की रचना 'हदिकत-उजल-अकालिम' आदि हैं। औरंगजेब की बेटी जेबून्निसा को भी साहित्य से प्रेम था।

उर्दू तथा फारसी भाषा के अलावा क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य का विकास हुआ। परमानन्द की कविताएं गुजराती में लिखी गई। कवि दया राम इस काल के अन्य महान गुजराती कवि थे। मराठी साहित्य कें विकास में शेख मुहम्मद ने 'योग अंगरामा', पवन विजय 'निशलंक-बोध' आदि महत्वपूर्ण रचना हैं । पंजाबी भाषा में इस काल में यूसूफ-जुलेखा, मिर्जा साहिबा, दशम ग्रन्थ नामक पुस्तक लिखी गई।

संस्कृत भाषा में भी कुछ साहित्यिक रचना रची गई। रघुनाथर रचित 'मुर्हतमाला' जोकि मुर्हत सम्बन्धी ग्रन्थ हैं और चतुर्भुज का 'रसकल्पद्रुम' जो औरंगजेब के चाचा शाइस्ता खाँ को समर्पित है। मारवाड़ में भी संस्कृत साहित्य की सुदीर्घ परम्परा रही है। यहां परम्परागत संस्कृत साहित्य की अमूल्य रचनाओं को लिपिबद्ध कर सुरक्षित किया गया। स्थानीय सामन्तों ने भी साहित्यकारों का आश्रय प्रदान किया। मरूप्रदेश की साहित्यिक भाषा मुख्यतया डिगंल ही रही थी जो सारे राजस्थान में समान रूप से व्याप्त थी। इस काल के अन्य प्रमुख डिंगल कवियों में बारठ करनीदान, आड़ा पहाडखां, सबलदान, बक्सीराम आदि उल्लेखनीय थे जिन्हें मारवाड़ के शासकों का सरंक्षण प्राप्त था।

इस प्रकार मुगलकाल में मुगल शासकों के अलावा मुगल अमीरों ने भी शिक्षा-साहित्य में काफी योगदान दिया था।

अमीरों का संगीतकला, चित्रकला, मूर्तिकला आदि के क्षेत्र में हुई उन्नति में भी विशेष योगदान था। औरंगजेब ने बेशक संगीत पर प्रतिबन्ध लगाया था। लेकिन संगीत से सम्बन्धित पुस्तकं उसके काल में खूब लिखी गई थी। बादशाह बहादुरशाह स्वयं संगीतकला को प्रोत्साहन देता था और बादशाह मुहम्मदशाह के समय में संगीत की विशेष उन्नति हुई। उसके दरबार में नियामत खान सफदरजंग और फिरोजखान अदरंग जैसे प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। ये दोनों संगीतज्ञ द्रुपद और ख्याल गायकी में प्रसिद्ध थे। मुजरा इसी समय में पनपा था। तबला, सितार का प्रयोग भी मुगल दरबार में खूब होता था। मुहम्मदशाह ने अपने उपनाम में ख्याल रचा था जिसे 'रंगीला पिया' कहा गया था। उत्तर मुगलकाल में संगीत के बल पर ही लालकुंवर नामक एक वेश्या ने साम्राज्ञी का पद प्राप्त कर लिया था। मुहम्मदशाह के काल में ही अदारंग दरबार की शोभा बढ़ाता था जिसने 'ख्याल' को एक नूतन आयाम प्रदान किया था। विलासी अमीर-उमरा अपने हरम में बड़ी संख्या में नृतकियां रखते थे और नृत्य तथा संगीत समारोहों के आयोजन द्वारा भरपूर मनोरंजन करते थे। साथ ही जनसाधारण में भी संगीत के प्रति पर्याप्त रूचि थी।

अठारहवीं सदी के दौरान मुगल चित्रकला का देश के अन्य भागों में भी विकास हुआ। मुगल दरबारी चित्रकला में स्त्री के यौवनपूर्ण सौंदर्य को प्रस्तुत करने का सफल प्रयत्न किया गया। कुछ चित्रों में मुगल दरबार की शान-शौकत या शिकार अभियान का चित्रण किया गया। फर्रूखसियार के शासनकाल में चित्रकला को नवीन प्रोत्साहन मिला था। निहालचन्द इस समय का प्रसिद्ध चित्रकार था। इसी समय चित्रकला के नए केन्द्र उभरे जिनमें प्रसिद्ध थे मुर्शिदाबाद, लखनऊ, हैदराबाद और साथ ही कुछ विशेष शैली भी उभर कर आई थी जैसे- कांगड़ शैली, मेवाड़ शैली, बीकानेर शैली, किशनगढ़ शैली आदि। जोधपुर के महाराजा जसवन्त सिंह ने कई प्रवीण चित्रकारों को अपने दरबार में प्रश्रय दिया। इस काल के चित्रकारों ने अनेक विषयों का चित्रांकन किया। पातूजी राठौड़-डूंग जी, जुआर जी आदि वीरों की तथा ढोल-मारू, मूमल दे निहार दे आदि प्रेमियों की लोक कथाओं का चित्रकला के द्वारा आलेख किया। राठौर दुर्गादास चित्रकारों का सर्वाधिक प्रिय विषय था, उसके युद्ध करते हुए अनेको व्यक्ति-चित्र उपलब्ध हैं उसे घोड़े पर दिखाया गया है। जोधपुर में रामा, नाथू, छज्जू, कृपाराम आदि कई प्रमुख हिन्दू चित्रकार हुए थे। इसके अतिरिक्त नूरा, मुहम्मद सेफू आदि मुस्लिम चित्रकार भी थे जिन्हें अजीत सिंह के समय में सरंक्षण मिला था। कांगड़ा शैली का सबसे कुशल चित्रकार भोलाराम था। भोलाराम का रंगों का प्रयोग बहुत ही सुन्दर था। मेवाड़ चित्रकारी शैली में भी बहुत अच्छे चित्र देखने को मिलते हैं। दरबारी चित्रण शैली तो संग्रामसिंह (1719-34) और जगत सिंह के शासनकाल में पहले की अपेक्षा और अधिक पल्लवित हुई थी। महाराजा सवाई जयसिंह (1699-1743) कला, स्थापत्य, साहित्य और ज्योतिष का महान सरंक्षक था। उसके अधीन अनेक सुविख्यात चित्रकार काम कर रहे थे। साहिबराम तो लगभग पचास वर्षों तक चित्रकारी के काम में लगा रहा। उसने बड़े-बड़े आकार के छवि-चित्र बनाए जिनमें से अनेक जयपुर के सिटी पैलेस संग्रहालय में प्रदर्शित है।

इसके अलावा इस काल में कांगड़ा शैली, बसौली कलम शैली, कोटा शैली, बीकानेर शैली, आदि का खूब विकास हुआ। क्यों कि यहां के राजाओं ने चित्रकारों को सरंक्षण दिया था।

इसके अलावा कुछ क्षेत्रों में मूर्तिकला का भी खूब विकास हुआ जैसे अजीतसिंह के शासनकाल में किले में उसने पत्थर व चांदी की कई मूर्तियाँ बनवाई थी। किले में मुरली मनोहरजी का चतुर्भुज रूप, हिंगुलाज देवी, महादेव तथा पार्वती को पूरे कद की चांदी की मूतियाँ बनवाई। मंडोर में महाराजा ने 'भैरों जी की साल' का नवीनीकरण करवाया। इसके साथ ही काला व गोरा की नई मूर्तियाँ भी स्थापित की गई। साथ ही 'भैरों जी की साल' के निकट ही 'वीरों की साल' है जिसे 'तैंतीस करोड़ देवताओं की साल' भी कहते हैं जिसमें एक ही पहाड़ को काटकर सोलह दीर्घकाय मूर्तियां बनाई गई थी। वीरों की मूर्तियों में कुछ मूर्तियाँ राव जोधा ने भी बनवाई थी।

इस प्रकार मुगलकालीन अमीर वर्ग का सांस्कृतिक योगदान महत्वपूर्ण था। अमीर वर्ग प्रशासनिक कार्यों को करने के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे। अपनी निजि अभिरूचि के साथ ही दरबार में आयोजित समारोहों, त्योहारों व सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेकर बादशाह को भी प्रभावित करने की कोशिश करते थे। शिक्षा तथा साहित्य के क्षेत्र में व समाज के अन्य लोक कल्याण के कार्यों में भाग लेकर वे लोगों की भलाई के कार्य भी करते थे। अमीर वर्ग देश के अतिरिक्त उत्पादन के एक बहुत बड़े अंश का उपयोग करता था। मुगल अमीरों ने अपनी आय से कारीगरों, चित्रकारों, कवियों और विद्वानों को भी प्रोत्साहन दिया था। इसी का परिणाम हुआ कि मुगल काल में एक उत्कृष्ट सांस्कृतिक वातावरण बना और सांस्कृति समिश्रण को प्रोत्साहन मिला जिसमें अमीरों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान था।

References

[1] पुष्पा सूरी, सोशल कंडीशन इन एटीन्थ सेन्चुरी नारदर्न इण्डिया, दिल्ली, 1977।
[2] प्रसिवल स्पीयर, टिविलाइट ऑफ़ दि मुगल्स, ऑक्सफोर्ड, 1973।
[3] आर॰पी॰ त्रिपाठी, सम आस्पैक्टस ऑफ द मुस्लिम एडमिनिस्ट्रेशन, इलाहाबाद, 1992।